जो खटास को मिठास में बदल दे वही जीवन सूत्र है

अशोक 'मानव'

- "जीवन धारा अपने लक्ष्य के मार्ग को स्वंय खोज लेती है आप सिर्फ सकारात्मक सोच बनाये रखें।"
- "जिस प्रकार प्रकाश के भार मुक्त होते हुए भी कोई तूफान उसे हिला नही सकता है ठीक उसी प्रकार दृढ़ इच्छा शक्ति रूपी मानव को कोई भी परिस्थिति डिगा नहीं सकती है।"
- "आत्मज्ञान सिर्फ परमात्मा को जान लेना ही नही बल्कि समस्त विषय के सत् को पहचान लेना है।"
- "आत्मज्ञान एक एहसास है जो पवित्र विचारो से उत्पन्न होता है। जिस दिन सोच सकारात्मक हो जायेगी उसी दिन से आत्मज्ञान का दरवाजा खुल जायेगा और धीरे-धीरे आत्मज्ञान की अनुभूति होने लगेगी।"
- "जिस प्रकार वाहन पर भार पीछे रखने पर गति तेज हो जाती है, ठीक उसी प्रकार जीवन में जिम्मेदारी का भार पीछे रखने पर जीवन की रफ्तार सरलता के साथ तेज हो जाती है। "
- "शारीरिक पीड़ा दवा से ठीक हो जाती है, मानसिक पीड़ा हवा से। हवा बनती है विषय परिवर्तन की सकारात्मक सोच से ।"
- "चाहत न पूरी होने पर उचाटन, घबराहट और बेचैनी पैदा होती है। चाहत का त्याग करके इस रोग से बचा जा सकता है।"
- "प्यार को नफरत में न बदला जाय तो पारिवारिक सम्बन्धों में आयी खटास की बूंद जंग को खत्म कर देती है, जो प्यार को और प्यारा बना देती है।"
- "विषय, एक स्वाभाविक स्वभाव जान लेने के बाद लिया गया निर्णय, जीवन निर्माण में सहायक होता है।"
- "स्वभाव का स्वाभाविक विकास पर कुछ स्वाभाविक सहयोगी मिल जाते है। पर बदलते स्वभाव पर व्यक्ति खुद एक दिन अपना साथ नही दे पाता है।"
- "कर्त्तव्य अधिकार की जमीन है जिस पर अधिकार रूपी फल स्वतः लगता है।"
- "शराफत तो आहट में भी नजर आती है। इस पथ पर चलने से जवानी जवाना बन जाती है और बुढ़ापे में सुरक्षा की चादर तन जाती है। "
- "भाषा जीवन का भूगोल होती है। जिसमें लयबद्ध (आगे हल्का पीछे भारी) भाषा विषय पूरा करने में प्रभावकारी ऊर्जावान होती है।"
- "समय को अपने साथ लेकर चलने से नही समय के साथ चलने से मंजिल मिल जाती है।"
- "अवस्था परिवर्तन प्रकृति की प्रवृत्ति है। जैसे बीज से पौधा पौधो से कली और कली से फूल बन जाता है। ठीक उसी प्रकार मानव स्वभाव पर चलते हुए एक दिन पुष्प बन कर अपनी गुणात्मक खुशबू छोड़ने लगता है।" सफर समय के साथ किया जाय तो जीवन सरल हो जाता है।
- साधना विषय का निशाना है जो ऊर्जा केन्द्रित करने के बाद पूरी होती है ऊर्जा के लिये साधना की जरूरत पड़ती है। मानव का साधन अपना शरीर है।
- परम प्रकाश पिण्ड के गुणों का विकास करता है। जब परम प्रकाश जीव प्रकाश बनकर जीवन धारण करता है। तो इच्छित विषय का गुणात्मक प्रकाश छोड़ता है जो अपने गुणो को बढ़ाने के लिए उत्पत्ति करता है।
- गुरूत्व गुणात्मकता का चुम्बक है जो गुणात्मक विकास से गुण का आदान-प्रदान करता है। दिखावे से नही।
- नव वर्ष पीछे को भुलाकर नव परिवर्तित करने का एक नाम है।